Dainik Bhaskar (Indore), 10th November 2021, Page-07

**आईआईटी का 9वां दीक्षांत समारोह** | 498 स्टूडेंट्स को दी गई डिग्री, भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. के विजयराघवन ने छात्रों से कहा...

# हम तकनीक का उपयोग जीवन के हर क्षण में कर रहे, फिर भी आपदा में असहाय हो गए, कुछ ऐसा करें जो हमें इनसे लड़ने काबिल बनाए

सिटी रिपोर्टर. इंदौर

वह 498 विद्यार्थी जो डिग्री लेने के लिए यहां मौजूद थे, उनके लिए यह गर्व का क्षण था और यह गौरव उनकी आंखों में दमक रहा था। उनके उत्साह से गूंज रहा था आईआईटी इंदौर का सभागार जहां मंगलवार को संस्थान का 9वां दीक्षांत समारोह हुआ।

डिग्री लेने वाले छात्रों को संबोधित करते हुए भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. के विजयराघवन ने कहा कि हम टेक्नोलॉजी की उपयोग तो जीवन के हर हिस्से, हर क्षण में कर रहे हैं। फिर भी आपदाओं से घिरने पर असहाय हो जाते हैं। आईआईटी से डिग्री लेने वाले आप सब युवाओं को इस दिशा में काम करना चाहिए। आपकी बुद्धि, आपका ज्ञान जन साधारण की समस्याएं सुलझा सके। ऐसे विषय जो मनुष्यता से जुड़े हैं उन पर काम कीजिए। खुद की तरक्की के साथ देश की तरक्की और बेहतरी आपका लक्ष्य होना चाहिए।

## शिक्षा की हमारी प्राचीन पद्धति का आधार इनोवेशन और रिसर्च, आज उसी पर अमल करना जरूरी

498 में से 268 छात्र ऑफलाइन, बाकी ऑनलाइन जुड़े।

दीक्षांत में 498 छात्र को डिग्री दी गई जो अब तक आईआईटी इंदौर से स्नातक करने वाले छात्रों की सबसे बड़ी संख्या है। 498 में से 268 यहां आए और बाकी ऑनलाइन जुड़े। समारोह में 15 पीएचडी प्रोग्राम के 109 स्टूडेंट, 5 बीटेक प्रोग्राम के 246 स्टूडेंट (स्नातक करने वाले बीटेक छात्रों की सबसे बड़ी संख्या), एमटेक प्रोग्राम के 41, 3 एमएस (अनुसंधान) प्रोग्राम के 19 स्टूडेंट, और 5 एमएससी प्रोग्राम के 83 स्टूडेंट शामिल रहे। इलेक्ट्रिकल और मैकेनिकल इंजीनियरिंग में एमएस (रिसर्च) प्रोग्राम के पहले बैच के छात्रों ने भी इस दीक्षांत समारोह में डिग्री पाई।

## काम ऐसा करें जो गांवों को भी तरक्की की राह पर लाए

प्रधानमंत्री के सलाहकार अमित खरे ने कहा - 'ग्रेजुएट हो रहे सभी विद्यार्थियों को बधाई। आज आपकी वह यात्रा पूरी हुई है जो स्कूल से शुरू हुई थी। फिर आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में प्रवेश की तैयारी और अब यहां से एक नए जीवन की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। लंबा सफर तय किया है आपने। आप सब तकनीक के बारे में पढ़ रहे हैं। उसे इस्तेमाल कर रहे हैं, लेकिन टेक्नोलॉजी का बेस्ट यूज़ हमें कोरोनाकाल में किया। तकनीक के साथ नई एजुकेशन पॉलिसी का फोकस है इनोवेशन और रिसर्च। हालांकि शिक्षण की हमारी प्राचीन पद्धति भी इसी पर आधारित थी। पूरी दुनिया उसकी खूबियों को मान चुकी है। आप सभी को मेरा सुझाव है कि काम कुछ ऐसा करें जो शहरों के साथ गांवों को भी तरक्की की राह पर लाए।

## सिविल सर्विस में जाकर देश की समाज की सेवा करना चाहता हूं

भारत के राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक पाने वाले ठाणे के गौरव अनिल खडसे ने कहा कि आईआईटी में प्रवेश के लिए 9वीं-10वीं से ही जुट जाते हैं। यहां आकर समझ पाते हैं कि यहां से इंजीनियरिंग सिर्फ रास्ता है। अंतिम लक्ष्य कुछ और है। इस संस्थान ने मुझे आउट ऑफ द बॉक्स सोचना सिखाया। जीने का सलीका सिखाया। अब समस्याओं का हल खुद निकाल पाता हूं। मैं सिविल सर्विस में जाकर देश के लिए, समाज के लिए, कुछ बेहतर करना चाहता हूं।

## पढ़ाई के लिए हॉबी छोड़ी, पढ़ाई में ही हॉबी ढूंढ ली मैंने

उड़ीसा की आरती सामल ने बूटी फाउंडेशन का स्वर्ण पदक हासिल किया। वे बताती हैं कि मास्टर्स में फीमेल कैंडिडेट का सीपीआई हाइएस्ट होता है तो उसे स्वर्ण पदक मिलता है। मैं केमिस्ट्री से हूं मैंने मास्टर्स से पीएचडी में ड्युअल डिग्री में जॉइन किया है। पीएचडी के बाद मुझे रिसर्च में जाना है। यहां तक पहुंचने के लिए मैंने दोस्तों को, अपनी हॉबीज़ को छोड़ा। मैंने पढ़ाई को ही हॉबी बनाया।